Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat
دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक09.06.2017 मस्जिद बैतुल फ़तूह,मॉर्डन लंदन

प्रत्येक अहमदी को अपने आचरण पर नज़र रखनी चाहिए

असंख्य लोग ऐसे होते हैं जो किसी न किसी के आचरण से प्रभावित होकर अथवा जमाअत के सामूहिक आचरण से प्रभावित होकर अहमदी हो रहे होते हैं।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

पिछले ख़ुत्बः में मैंने बयान किया था कि रोज़ों और रमज़ान का उद्देश्य जो अल्लाह तआला ने बयान फ़रमाया है, वह दिलों में तक़्वा पैदा करना है और इस संदर्भ में मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ उद्धरण पेश किए थे कि उनकी प्राप्ति के तरीक़े क्या हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस विषय को हमारे दिलों में बिठाने के लिए विभिन्न स्थानों पर इसकी व्याख्या की है ताकि हमारे दिलों में इसका महत्त्व समा जाए और हमारे प्रत्येक कर्म और आचरण के द्वारा यह प्रकट होने लगे। क्यूँकि यदि तक़्वा नहीं तो किसी भी प्रकार की नेकी नहीं हो सकती। अस्थाई एवं क्षणिक नेकियाँ प्रत्येक इंसान क्षणिक जोश तथा कारण से कर लेता है परन्तु इसमें निरन्तरता तभी आती है जब वास्तविक तक़्वा हो। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि तक़्वा की अनेक शाखें हैं, दिखावे, स्वाभिमान, हराम माल और बुरे आचरण से बचना भी तक़्वा है। जो व्यकित अच्छे आचरण प्रकट करता है उसके दुश्मन भी दोस्त हो जाते हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है اِدۡفَعۡ بِالَّتِیۡ ھِیَ اَحۡسَنُ यदि विरोधी गाली भी दे तो उसका जवाब गाली से न दिया जाए बल्कि उस पर सब्र किया जाए, इसका परिणाम यह होगा कि विरोधी तुम्हारी अच्छाई को स्वीकार करते हुए स्वयं ही लज्जित होगा और यह सज़ा उस सज़ा से बहुत बढ़ कर होगी जो बदले की भावना से तुम उसे दे सकते हो।

फ़रमाया- आचरण का अभिप्रायः केवल विनम्रता नहीं है। फ़रमाया- ख़ल्क़ और ख़ुल्क़ दो शब्द हैं जो एक दूसरे के विलोम हैं। ख़ल्क़ ज़ाहरी पैदायश का नाम है जैसे कान, नाक यहाँ तक बाल इत्यादि भी सारे ख़ल्क़ में शामिल हैं तथा ख़ुल्क़ भीतरी संरचना का नाम है। ऐसा ही भीतरी शक्तियाँ जो मानव और अमानुष में अन्तर करती हैं वे सारी ख़ुल्क़ में दाख़िल हैं यहाँ तक कि बुद्धि और चिंतन इत्यादि समस्त शक्तियाँ ख़ुल्क़ ही में दाख़िल हैं।

अख़लाक का अभिप्रायः ख़ुदा की रज़ाजोई की प्राप्ति है इस लिए ज़रूरी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जीवन शैली के अनुसार अपना जीवन बनाने का प्रयास करे। अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में फ़रमाया कि इन्नका लअला ख़ुलुक़िन अज़ीम और ज़िन्दगी के हर मैदान में आपने अपने आचरण के वे नमूने क़ायम कर दिए जो अपनी मिसाल आप हैं और जिस पर अपनी शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार चलना प्रत्येक मोमिन का कर्त्तव्य है। एक समय पर आप अपने सशक्त भाषण से एक गिरोह को चित्र की भांति चकित कर देते थे। एक समय आता है कि तीर और तलवार के मैदान में बढ़ कर बहादुरी दिखाते हैं। दान शीलता पर आते हैं तो सोने का पहाड़ दे देते हैं। विनम्रता में अपनी शान दिखाते हैं तो वाजिबुल क़त्ल (जिसका वध अनिवार्य हो) को छोड़ देते हैं। अभिप्रायः यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उदाहरण सर्वोत्तम और सम्पूर्ण नमूना है जो ख़ुदा तआला ने दिखा दिया है। एक समय आता है आपके पास इतनी अधिक भेड़ बकरियाँ थीं कि क़ैसरो किसरा (दो महान राज्य) के पास भी न हों आपने वे सारी एक मांगने वाले को दान कर दीं, ख़ुल्क़ का यह इज़्हार है, अब यदि पास न होता तो क्या दान करते। फिर एक अन्य रंग है यदि शासनीय रंग न होता तो यह कैसे साबित होता कि आप वाजिबुल क़त्ल काफ़िरों को, इसके बावजूद की बदला लेने का सामर्थ्य रखते थे, क्षमा कर देते हैं जिन्होंने सहाबा किराम और हुज़ूर अलैहिस्सलाम तथा मुसलमान औरतों को कड़ी से कड़ी यातनाएँ और कठिनाईयाँ दी थीं। जब वे सामने आए तो आपने फ़रमाया --------------------- अतः ये वे सम्पूर्ण नमूने हैं जिनके बारे में अल्लाह

तआला ने फ़रमाया कि इस रसूल के जीवन का तुम भी अपनी शक्ति एवं सामर्थ्यानुसार अनुसरण करो। इसके लिए कोशिश और संघर्ष की आवश्यकता है। अतः इस विषय पर बयान फ़रमाते हुए आप फ़रमाते हैं कि जब तक इंसान मुजाहिदा (संघर्ष) न करेगा, दुआ से काम न लेगा, वह परछाई जो दिल पर पड़ जाती है दूर नहीं हो सकती। अतः अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि ان الله لا يغير ما بقوم حتىٰ يغيرما بانفسهم अर्थात- ख़ुदा तआला हर प्रकार की आफ़त और बला को जो क़ौम पर आती है दूर नहीं करता जब तक ख़ुद क़ौम उसको दूर करने की कोशिश न करे। यह अल्लाह तआला का स्थाई विधान है, जैसा कि फ़रमाया- فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللهِ تَبْدِيْلًا अतः हमारी जमाअत हो अथवा कोई हो वे आचरण में बदलाव उसी समय कर सकते हैं जब मुजाहदे और दुआ से काम लें अन्यथा सम्भव नहीं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस बात को बयान फ़रमाते हुए कि इंसान के आचरण कितने भी गिरे हुए हों यदि सुधार करना चाहे तो सुधार हो सकता है। फ़रमाया कि इसके लिए संघर्ष करना पड़ता है। फ़रमाया- वास्तविकता यह है आलस और सुस्ती न हो और हाथ पैर हिलावे तो बदलाव आ सकता है। जिन विद्वानों का यह विचार है कि आचरण में बदलाव सम्भव नहीं, वे ग़लती पर हैं। हम देखते हैं कि कई नौकरी करने वाले लोग जो रिश्वत लेते हैं, जब वे सच्ची तौबा कर लेते हैं फिर यदि उनको कोई सोने का पहाड़ भी दे तो उस पर नज़र नहीं डालते।

फिर आप आचरण की विशुद्धि की ओर ध्यान दिलाते हुए फ़रमाते हैं- याद रखो कि वृद्धावस्था दो प्रकार की होती है, प्राकृतिक और अप्राकृतिक। प्राकृतिक अवस्था बाह्य शरीर का बुढ़ापा है तथा अप्राकृतिक यह है कि कोई अपने रोग की चिंता न करे। जो रोग हैं उनकी चिंता न करो तो वे मनुष्य को कमज़ोर करके समय से पहले पीराना साल बना देंगी, बूढ़ा कर देंगी। फ़रमाया कि ऐसा ही भीतरी तथा आध्यात्मिक निज़ाम में भी होता है यदि कोई अपने बुरे आचरणों को अच्छे आचरणों तथा शुभ आचरणों में परिवर्तित नहीं करता तो उसके आचरणों की स्थिति बिल्कुल गिर जाती है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशाद और क़ुर्आन-ए-करीम की शिक्षा से यह बात पूर्णतः प्रमाणित हो चुकी है कि प्रत्येक रोग की दवा है परन्तु यदि आलस और सुस्ती इंसान पर छा जावे तो विनाश के अतिरिक्त और क्या है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः आजकल इस सुस्ती को दूर करने के लिए अल्लाह तआला ने सामानों की व्यवस्था की है। इस महीने में आचरण को अच्छा बनाने की ओर भी प्रत्येक को ध्यान देना चाहिए और कमज़ोरियों और गुनाहों से बचने की ओर भी ध्यान देना चाहिए। यदि ध्यान न दिया इस वातावरण के बावजूद तो जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, तो फिर बुढ़ापे की अवस्था में चला जाएगा और उसके जीवन का विनाश है और फिर अल्लाह तआला के समक्ष इंसान तक़्वा के बिना हाज़िर होता है।

फिर आचरण की प्राप्ति के लिए तौबा की ओर ध्यान दिलाते हुए आप अलै. फ़रमाते हैं- तौबा वास्तव में अच्छे आचरण को प्राप्त करने के लिए बड़ी शुभ तथा प्रेरणा दायक चीज़ है तथा इंसान को सम्पूर्ण बना देती है अर्थात जो व्यक्ति अपने बुरे आचरण को बदलना चाहता है उसके लिए अनिवार्य है कि सच्चे दिल और पक्के संकल्प के साथ तौबा करे। यह बात भी याद रखनी चाहिए कि तौबा की तीन शर्तें हैं, उनको पूरा किए बिना सच्ची तौबा, जिसे तौबतुन्नसूह कहते हैं, प्राप्त नहीं होती।

इन तीनों शर्तों में से पहली शर्त जिसे अर्बी भाषा में इक़लाअ कहते हैं, यह है कि उन बुरे विचारों तथा कल्पनाओं को छोड़ दे। उदाहरणतः यदि कोई व्यक्ति किसी महिला से अवैध सम्बंध रखता हो तो उसे तौबा करने के लिए पहले आवश्यक है कि उसकी शकल को भद्दी जाने तथा उस सम्बंध के समस्त बुरे विचारों को अपने दिल में लावे। क्यूँकि जैसा कि मैंने अभी कहा है कि कल्पना का प्रभाव बड़ा प्रभावकारी है और मैंने सूफ़ियों की जीवनी में पढ़ा है कि उन्होंने कल्पना को यहाँ तक पहुंचाया कि इंसान को बन्दर अथवा सुअर की अवस्था में देखा। अभिप्रायः यह है कि जैसा कोई विचार करता है वैसा ही रंग चढ़ जाता है। इस प्रकार जो बुरे विचार आनन्द दायी होने का कारण समझे जाते हैं उनको नष्ट करे, यह पहली शर्त है।

दूसरी शर्त नद्म अर्थात पश्चाताप है, अतः गुनाह और बदी हो जाने पर पश्चाताप ज़ाहिर करे और यह विचार करे कि ये आनन्द अस्थाई तथा कुछ दिनों के लिए हैं और फिर यह भी सोचे कि हर बार इस आनन्द और सुख में कमी होती जाती है यहाँ तक कि बुढ़ापे में आकर जब शक्तियाँ शून्य और कमज़ोर हो जाएँगी अन्ततः इन सारे दुनया के आनन्दों को छोड़ना होगा। इस प्रकार जब स्वयं ही जीवन में ये सारे आनन्द छूट जाने वाले हैं तो फिर इनको प्राप्त करने से क्या मिलेगा? बड़ा ही सौभाग्य शाली है वह मनुष्य जो तौबा की ओर पलट आवे और जिसमें सर्व प्रथम इक़लाअ का विचार पैदा हो, अर्थात बुरे विचारों तथा कल्पनाओं को नष्ट करे। जब यह गन्दगी और अपवित्रता निकल जावे तो फिर पश्चाताप करे तथा अपनी करनी पर लज्जित हो।

तीसरी शर्त अज़्म है, अर्थात आगे के लिए पक्का इरादा करना कि फिर इन बुराईयों की ओर लौट कर न आएगा। आप फ़रमाते हैं

कि हमारी जमाअत में बड़े बलवान पहलवानों की आवश्यकता नहीं बल्कि ऐसी शक्ति रखने वाले चाहिएँ जो अपने आचरणों को बदलने का प्रयास करने वाले हों। यह एक वास्तविकता है कि वह बलवान तथा शक्ति शाली नहीं जो पहाड़ को अपने स्थान से हटा दे बल्कि वास्तविक बलवान वह है जो अपने आचरण को बदलने का सामर्थ्य रखता हो। अतः याद रखो कि सारी शक्ति एवं साहस आचरण को बदलने में लगाओ क्यूँकि यही वास्तविक शक्ति एवं साहस है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- अख़लाक़ी हालत एक ऐसी करामत है जिस पर कोई उंगली नहीं रख सकता और यही वजह है कि हमारे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सबसे बड़ा तथा सशक्त उपहार आचरण का ही दिया गया है। जैसे कि फ़रमाया- انك لعلى خلق عظيم यूँ तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर प्रकार की शक्तियों में समस्त नबियों के चमत्कारों में सबसे बढ़े हुए हैं परन्तु आपके अख़लाक़ के चमत्कार का नम्बर उन सब में सर्वप्रथम है जिसकी तुलना दुनया के इतिहास में नहीं की जा सकती और न ही इतिहास ऐसा उदाहरण पेश कर सकेगा।

आप अलै. फ़रमाते हैं- मैं समझता हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति जो अपने बुरे आचरण को छोड़ कर, बुरी प्रवृत्ति को छोड़ कर अच्छे आचरण को प्राप्त करता है उसके लिए वही करामत है। उदाहरणतः यदि बड़ी ही कठोर कुप्रवृत्ति और क्रोध की प्रवृत्ति को छोड़ता है तथा विनम्रता एवं क्षमाशीलता को धारण करता है तो निःसन्देह यह चमत्कार है, अथवा क्षमा शीलता को धारण करता है या कंजूसी को छोड़कर दानशीलता या ईर्षा के बजाए सहानुभूति की भावना अपनाता है तो निःसन्देह यह करामत है और ऐसा ही अहंकार और घमंड को छोड़कर जब विनयता एवं विनम्रता धारण करता है तो यह विनम्रता करामत है। अतः तुममें से कौन है जो नहीं चाहता कि करामाती बन जावे। मैं जानता हूँ हर एक यही चाहता है। इंसान अख़लाक़ी हालत को ठीक करे क्यूँकि यह एक ऐसी करामत है जिसका प्रभाव कभी नहीं जाता बल्कि इसका लाभ दूर तक जाता है। फ़रमाया कि मोमिन को चाहिए कि ख़ल्क़ और ख़ालिक़ की दृष्टि में चमत्कारी हो जावे। फ़रमाया कि बहुत से शराबी और क्रूर व्यक्ति ऐसे देखे गए हैं जो किसी चमत्कारी निशान को नहीं मानते परन्तु आचरण की शक्ति को देखकर उन्होंने भी सिर झुका लिया और मान लेने और स्वीकार कर लेने के अतिरिक्त कोई रास्ता नहीं मिला। अतः फ़रमाते हैं कि अनेक लोगों के जीवन चरित्र में इस बात को पाओगे कि उन्होंने अख़लाक़ की करामात ही को देखकर सच्चे दीन को क़बूल कर लिया है।

फिर ईमान लाने के विभिन्न कारणों के बारे में बयान करते हुए आप फ़रमाते हैं कि क्रूर लोग जो नबियों के विरोध में थे विशेष रूप से वे लोग जो हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुक़ाबले पर थे उनका ईमान लाना चमत्कारों पर आधारित नहीं था और न ही चमत्कार एवं अद्भुत बातें उनकी संतुष्टि का कारण थीं बल्कि वे लोग आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सुन्दर आचरण को ही देखकर आपकी सच्चाई के सामने धराशाई हो गए थे। फ़रमाया- अच्छे आचरणों का प्रभाव उन लोगों पर भी पड़ता है जो कई प्रकार के निशानों को देखकर भी संतोष एवं विश्वास नहीं पा सकते। बात यह है कि कुछ लोग प्रत्यक्ष चमत्कारों और अद्भुत घटनाओं को देखकर ईमान लाते हैं और कुछ लोग वास्तविकता तथा सच्चाई को देखकर ईमान लाते हैं परन्तु अधिकांश लोग वे होते हैं जिनकी हिदायत और संतुष्टि का कारण सुन्दर आचरण होते हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- निःसन्देह लोग आजकल भी जो अहमदियत में दाख़िल होते हैं, किसी न किसी अहमदी के आचरण से प्रभावित होकर अथवा सामूहिक रूप से जमाअत के आचरण से प्रभावित होकर अहमदी हो रहे होते हैं। अतः प्रत्येक अहमदी को इस बात पर नज़र रखनी चाहिए कि अच्छे आचरण केवल उसे तक़्वा में बढ़ाने वाले नहीं हैं बल्कि दीनी कर्त्तव्य हैं तथा दूसरों के सुधार का माध्यम भी हैं इस लिए हर अहमदी को अपने अख़लाक़ पर नज़र रखनी चाहिए।

ईमान का तरीक़ क्या है इसकी व्याख्या फ़रमाते हुए आप फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला से सुधार चाहना और अपनी शक्ति को लगाना यही ईमान का तरीक़ा है। हदीस शरीफ़ में आया है कि जो विश्वास के साथ अपना हाथ दुआ के लिए उठाता है, अल्लाह तआला उसकी दुआ रद्द नहीं करता है। अतः ख़ुदा से मांगो तथा विश्वास और सच्चे मन से मांगो। फ़रमाते हैं कि मेरी नसीहत फिर यही है कि अच्छे आचरणों का प्रदर्शन ही अपने चमत्कार प्रकट करना है। देखो ये करोड़ों मुसलमान जो धरती के विभिन्न भागों में नज़र आते हैं, क्या ये तलवार के ज़ोर से अथवा ज़ोर ज़बरदस्ती से मुसलमान हुए हैं? नहीं यह बिल्कुल ग़लत है, यह इस्लाम का करामाती प्रभाव है जो उनको खींच लाया है। बड़े बड़े विद्वान अंग्रेज़ों को यह बात माननी पड़ी है कि इस्लाम की सच्चाई की रूह ही ऐसी सशक्त है जो अन्य क़ौमों को इस्लाम में आने पर विवश कर देती है।

फिर इस बात को बयान फ़रमाते हुए कि आचरण भी रिज़्क़ की भांति हैं तथा इनकी अभिव्यक्ति अल्लाह तआला के दिए हुए सामान के ख़र्च करने की भांति है और यह भी तक़्वा का एक सक्रिय भाग एवं अंश भी है आप फ़रमाते हैं कि सामान्य लोग रिज़्क़ का अर्थ खाद्य सामग्री लेते हैं, यह अनुचित है फ़रमाया कि जो कुछ सामर्थ्य दिया जावे वह भी रिज़्क़ है। ज्ञान, विवेक इत्यादि प्रदान किए

जाते हैं, शारीरिक रूप से समृद्धि एवं सम्पत्ति का विकास, सब रिज़्क़ है। बन्दे की प्रतिभाएँ, उसके आचरण, उसका माल, प्रत्येक चीज़। फ़रमाया कि रिज़्क़ में राज्य भी शामिल है तथा अच्छे आचरण भी रिज़्क़ में ही दाख़िल हैं।

याद रखो कि वही कंजूस नहीं है जो अपने माल में से किसी मजबूर को कुछ नहीं देता बल्कि वह भी कंजूस है जिसको अल्लाह तआला ने ज्ञान दिया हो और वह दूसरों को सिखाने में आनाकानी करे। फ़रमाया- केवल इस विचार से अपने ज्ञान एवं विवेक से किसी को अवगत न करना कि यदि वह सीख जाएगा तो हमारा महत्त्व कम हो जाएगा अथवा आमदनी में कमी आ जाएगी, शिर्क है। क्यूँ कि इस अवस्था में वह उस ज्ञान एवं विवेक को ही अपना राज़िक़ और ख़ुदा समझता है। इसी प्रकार से जो अपने अख़लाक़ से काम नहीं लेता वह भी कंजूस है। अख़लाक़ का देना यही होता है कि जो सुन्दर आचरण अल्लाह तआला ने केवल अपनी कृपा से दे रखे हैं उसके बन्दों से उन शिष्टाचारों के साथ पेश आवे। फ़रमाया- वे लोग इसके नमूने को देखकर ख़ुद भी अच्छे आचरण पैदा करने का प्रयास करेंगे।

अख़लाक़ का अभिप्रायः केवल इतना ही नहीं कि भाषा और शब्दों में विनम्रता से काम ले, नहीं, बल्कि साहस, सदभावना, पवित्रता इत्यादि जितनी प्रकार की शक्तियाँ इंसान को दी गईं हैं वास्तव में सारी अख़लाक़ी शक्तियाँ हैं इनका उचित स्थान एवं समय पर उपयोग में लाना ही उनको अख़लाक़ी हालत में ले आता है।

अपनी जमाअत के लोगों का उच्च शिष्टाचार पर सुशोभित होने तथा अपने भीतर बदलाव पैदा करने की नसीहत करते हुए आप फ़रमाते हैं कि जो व्यक्ति अपने पड़ौसी को अपने आचरण में बदलाव दिखाता है, पहले क्या था अब क्या है, वह मानो एक चमत्कार दिखाता है। इसका प्रभाव पड़ौसी पर बड़ा अच्छा पड़ता है। जब कोई व्यक्ति एक सिलसिले में शामिल होता है और इस सिलसिले की प्रतिष्ठा का मान नहीं रखता तथा इसके विरुद्ध करता है तो वह अल्लाह के यहाँ पकड़ा जाता है। वह केवल अपने आपको ही नष्ट नहीं करता अपितु दूसरों के लिए भी बुरा नमूना होकर उनको सज्जनता एंव हिदायत की राह से वंचित रखता है। अतः जहाँ तक आप लोगों का सामर्थ्य है ख़ुदा तआला से मदद मांगो तथा अपनी सम्पूर्ण शक्ति एवं साहस के साथ अपनी कमज़ोरियों को दूर करने की कोशिश करो। जहाँ विवशता हो वहाँ सत्य और विश्वास के साथ हाथ उठाओ, क्यूँकि श्रद्धा एवं विनय के साथ उठाए हुए हाथ जो सत्य एवं विश्वास की प्रेरणा से उठते हैं ख़ाली वापस नहीं होते। हम तजरबे से कहते हैं कि हमारी हज़ारों दुआएँ क़बूल हुई हैं और हो रही हैं। फ़रमाते हैं- यह एक विश्वस्त बात है कि यदि कोई व्यक्ति अपने अन्दर अपने ही जैसे मानवों के लिए साहनुभूति का जोश नहीं पाता, वह कंजूस है। यदि मैं एक राह देखूँ जिसमें भलाई और ख़ैर है तो मेरा कर्त्तव्य है कि मैं पुकार पुकार कर लोगों को बतलाऊँ। इस बात की चिंता नहीं होनी चाहिए कि कोई इसके अनुसार कर्म करता है कि नहीं।

अतः हमारे प्रत्येक कर्म से यह साबित होना चाहिए कि हमने आपकी बैअत में आकर अपने अन्दर अख़लाक़ी बदलाव पैदा किए, पाक तबदीलियाँ पैदा कीं और फिर लोगों को यह बताएँ, यह भी तबलीग़ का साधन है। अल्लाह तआला हमें तक़्वा पर चलते हुए अपने शिष्टाचार में पवित्र बदलाव पैदा करने और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सुन्दर आचरण को सामने रखने तथा उच्च स्तरीय शिष्टाचार को हर समय प्रकट करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आशा के अनुसार ही अपने जीवन व्यतीत करने वाले हों।

ख़ुत्बः जुम्अः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- नमाज़ के बाद मैं दो जनाज़े ग़ायब भी पढ़ाऊँगा। एक मुकर्रम लुतफ़ुर्रहमान महमूद साहब, अमरीका का है जो मुकर्रम मियाँ अताउर्रहमान साहब के बेटे थे। 27 मई 2017 को इनका निधन हो गया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। दूसरा जनाज़ा अज़ीज़म मिर्ज़ा उमर अहमद साहब का है जो साहिबज़ादा डाक्टर मिर्ज़ा मुनव्वर अहमद साहब मरहूम के बेटे थे। 5 जून दोपहर दो बजे ताहिर हॉर्ट इंस्टीटयूट रबवा में 67 साल की आयु में इनका निधन हो गया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। हूज़ूर-ए-अनवर ने दोनों मरहूमीन के सदगुण बयान फ़रमाए।

Toll Free No: 180030102131